अध्याय-4

लेन-देन का बदलता स्वरूप

जैसे ही सुबह के चार बजे, घड़ी में अलार्म बजना शुरू हो गया। अलार्म की आवाज सुनते ही अभिषेक जग गया। उसने अपनी छोटी बहन अंकिता को उठाया। घर के बाकी लोग भी उठ गये थे। अभिषेक और अंकिता दोनों बहुत खुश थे। कई साल बाद वे अपने गाँव चकरी जा रहे थे, जो सिवान जिले में है। गाँव पहुँचते–पहुँचते शाम हो गयी । सभी काफी थक गए थे। अभिषेक और अंकिता जल्दी ही खा–पीकर सो गए।

सुबह अंकिता की आँख खुली तो उसने देखा कि उसकी दादी एक महिला से दही ले रही थी। दही लेने के बाद उन्होंने उस महिला को दो किलो गेहूँ दिया। यह देखकर उसे काफी आश्चर्य हुआ। क्योंकि अभी तक उसने पैसे से ही सामान खरीदते देखा था।

सुबह 10 के आस–पास जब अभिषेक घर के बरामदे में बैठकर पढ़ रहा था तभी उसका ध्यान भोंपू की आवाज पर गया। पास जाकर उसने देखा कि एक साइकिल पर कोई आदमी आइसक्रीम बेच रहा है ।

बच्चे उसे चारो तरफ से घेरे हुए हैं। किसी बच्चे के हाथ में गेहूँ है, तो कोई मकई देकर आइसक्रीम ले रहा है। एक बच्चे को आइसक्रीम विक्रेता ने कहा कि दो मुट्ठी गेहूँ और लाओ तब आइसक्रीम मिलेगी। अभिषेक ने देखा कि आइसक्रीम वाला बच्चों से लगभग 100 ग्राम गेहूँ लेकर एक आइसक्रीम दे रहा है। अभिषेक दौड़कर घर के अन्दर गया और एक डलिया में अंदाज से 100 ग्राम गेहूँ लेकर आइसक्रीम वाले को दिया। आइसक्रीम वाले ने उसे भी एक आइसक्रीम दे दी।

कुछ देर बाद मूँगफली और सोनपापड़ी, बेचने वाला आया। उससे अंकिता ने गेहूँ के बदले कुछ मूँगफली और थोड़ा सोनपापड़ी खरीदा। अभिषेक और अंकिता को सामान खरीदने का यह तरीका काफी अच्छा लगा क्योंकि यहाँ सामान खरीदने के लिए उसे किसी से पैसे मांगने की जरूरत नहीं पड़ रही है और अनाज लेने से उसे कोई नहीं रोकता है।

प्रश्न– क्या आपने या आपके परिवार के किसी सदस्य ने वस्तु देकर किसी वस्तु को खरीदा है ? यदि हाँ तो वर्णन करें।

शाम को दोनों बच्चे अपने दादाजी के साथ उस दिन लगने वाले गाँव के साप्ताहिक बाजार में गए। यहाँ दादाजी ने सबसे पहले उनके लिए कुछ जलेबियाँ खरीदी। फिर कुछ स्टील के बर्तन और एक चादर खरीदकर घर लौट आए। यहाँ दादाजी ने सभी दुकानदारों को उनके वस्तुओं के बदले पैसे दिए।

घर लौटने पर अभिषेक ने दादाजी से कहा—दादाजी कितना अच्छा होता कि कोई सामान खरीदने के लिए पैसों की जरूरत नहीं हो। सिर्फ कोई सामान देकर ही विक्रेता से उसकी वस्तु खरीदी जा सकती। मुझे तो यह काफी अच्छा लगता है। और जब वस्तुओं के माध्यम से किसी वस्तु की खरीद बिक्री की जाती है तो फिर बाजार से सामान खरीदने पर दुकानदारों को पैसे क्यों दिए जाते हैं।

प्रश्न–यदि आपको बाजार से कुछ बर्तन और चादर खरीदना हो तो आप उसे पैसे से खरीदना चाहेंगे या वस्तु के माध्यम से? और क्यों ?

यह सुनकर दादाजी ने बताया कि बहुत पहले रुपये या सिक्को का चलन नहीं था। एक समय था, जब मनुष्य अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति खेत से उपजाकर या इकट्ठा कर पूरा कर लेते थे। शेष आवश्यकताओं की पूर्ति वे वस्तुओं की अदला–बदली के द्वारा करते थे।यदि लोहार खेती कार्य के लिए कुदाल या हल बनाता था तो किसान कोई अनाज देकर भी उसे खरीद लेता था। उसी प्रकार मान लो कि लुहार को चमड़े की किसी वस्तु या चप्पल की आवश्यकता हो तो वह चर्मकार से उस वस्तु को खरीदता है। इसके बदले वह उसे लोहे से निर्मित कोई वस्तु या कहीं से प्राप्त अनाज देता है।

अनाज की मात्रा या वस्तुओं की संख्या का निर्धारण परम्परा या आपसी बातचीत से तय होते थे। इस प्रणाली को **वस्तु विनिमय प्रणाली** कहा जाता है।

लेकिन वस्तु विनिमय प्रणाली में कई कठिनाइयाँ थीं। बाद में जब रुपयों का चलन शुरू हुआ तो लेन–देन वस्तुओं की खरीद–बिक्री तथा व्यापार में काफी सहूलियत होने लगीं। और इसी सहूलियत के लिए वस्तुओं की खरीद रुपयों के माध्यम से करना पसंद किया जाने लगा।

जब किसी वस्तु की खरीद–बिक्री दूसरी वस्तु के माध्यम से किया जाता है तो उसे वस्तु विनिमय प्रणाली कहा जाता है।

प्रश्न –

1. गाँवों/शहरों में वस्तु–विनिमय प्रणाली का और कौन–कौन सा उदाहरण दिखता है ?
2. क्या इसके अतिरिक्त भी कोई अन्य परम्परा जिसके माध्यम से लेन–देन देखने को मिलता है? जैसे की शादी–विवाह के समय?

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयाँ

प्रश्न–क्या यह आपस में लेन–देन कर सकते हैं?

ऊपर के चित्र से स्पष्ट है कि यदि किसी के पास गेहूँ है और उसके बदले वह आम चाहता है तो उसे ऐसे व्यक्ति की खोज करनी होगी जिसके पास आम हो और वह उसके बदले गेहूँ चाहता हो। लेकिन सामान्यता इस प्रकार के दोहरे संयोग का अभाव होता है।

प्रश्न – दोनों के बीच मूल्य कैसे तय होगा?

पिछले चित्र में आप देख रहे हैं कि एक मटका बेचने वाले और एक कपड़ा बेचने वाले के बीच बहस हो रही है। वस्तु विनिमय में अक्सर चीजों के मोल को लेकर खींचा तानी होती है। आपस में मूल्य तय करना आसान नहीं है। यदि बहुत सी वस्तुओं के बीच लेन–देन होता है तो यह और भी कठिन हो जाता है।

प्रश्न– ऐसी स्थिति में क्या परेशानी हो रही है? समझाओ।

ऊपर के चित्र में आप देख रहे हैं कि बकरी वाले को अपनी बकरी के बदले 6 टोकरी अनाज चाहिए। लेकिन अनाज वाले के पास 3 टोकरी अनाज है। ऐसी स्थिति में वह बकरी को आधा नहीं कर सकता है। इसी प्रकार यदि वह शेष 3 टोकरी अनाज किसी अन्य से लेता है तो उन दोनों व्यक्तियों के बीच अपनी बकरी का विभाजन नहीं कर सकता है। अर्थात् वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तु विभाजन में कठिनाई हो सकती है।

इसके अतिरिक्त वस्तु विनिमय प्रणाली में कुछ और कठिनाइयाँ हैं जिन्हें निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है–

वस्तु विनिमय प्रणाली में संचय अर्थात् जमा करके रखने का काम केवल वस्तुओं के रूप

में किया जा सकता है। वस्तुओं को अधिक दिनों तक संचय करने में सड़ने –गलने का भय होता है। यदि संचय गाय, घोड़ा, बकरी, मुर्गा आदि के रूप में किया जाए और उनकी बीमारी के कारण या सामान्य मृत्यु हो जाए तो सारा संचित धन समाप्त हो जाएगा। अतः इस प्रणाली में संचय करना कठिन होता है। इसी प्रकार इस प्रणाली में संचित मूल्य या सम्पत्ति जो वस्तु के रूप में होती है, को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में काफी कठिनाइयाँ होती हैं।

मान लें कि अविनाश का मकान सहरसा में है जिसे बेचकर वह पटना जाकर बसना चाहता है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मकान का जो मूल्य वस्तु (गाय, अनाज आदि) के रूप में प्राप्त होगा उसे पटना ले जाना काफी कठिन होगा। अर्थात् इस प्रणाली में मूल्य के हस्तांतरण का अभाव होता है।

प्रश्न– उपरोक्त चित्रों तथा विवरण से आप वस्तु विनिमय की कठिनाइयों को अपने शब्दों में समझाएँ।

मुद्रा से सहूलियत :

जैसा कि आप जान चुके हैं कि वस्तु विनिमय प्रणाली में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ थीं। उन कठिनाइयों के कारण व्यापार में भी दिक्कते आने लगी।

धीरे–धीरे यह समझ बनने लगी कि कोई ऐसी वस्तु होनी चाहिए जिसके बदले में जरूरत की चीजें मिल जाएँ और उसी वस्तु को लेन–देन का माध्यम मान लें। भले ही उस वस्तु की जरूरत न हो, बावजूद इसके उसे लेन–देन का माध्यम माना गया है, इसलिए कोई उसे लेने

से मना नहीं करेगा। इसी के बाद धीरे–धीरे मुद्रा का चलन शुरू हुआ। मुद्रा के चलन ने वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों को दूर करना शुरू कर दिया तथा लेन–देन मुद्रा के माध्यम से होने लगा। इससे व्यापार में सुविधा होने लगी।

जब किसी वस्तु की खरीद–बिक्री मुद्रा अथवा रुपये –पैसे के माध्यम से किया जाता है तो उसे मुद्रा विनिमय प्रणाली कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं ? मुद्रा का प्रारंभिक स्वरूप वस्तु मुद्रा के रूप में था। प्राचीन काल (आखेट युग) में जब मनुष्य जानवरों के शिकार द्वारा जीवन–यापन करता था तब पशुओं का खाल या चमड़ा का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था। बाद में (चारागाह युग में) पशुओं का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया जाने लगा। उसके बाद मनुष्य खेती करने लगा तो अनाज का प्रयोग भी मुद्रा के रूप में किया जाता था। इन्हें वस्तु मुद्रा कहा जाता है।

शेरशाह सूरी द्वारा चलाया गया रुपया

प्राचीन काल से आज तक मुद्रा का स्वरूप निरंतर बदलता रहा है। वस्तु–मुद्रा के बाद सर्वप्रथम धातु मुद्रा का चलन शुरू हुआ। इसमें लोहा, तांबा, पीतल, सोना, चाँदी आदि का प्रयोग किया जाता था। लेकिन धातु मुद्रा में भी कई कमी थी। यह भारी होता था, लेन–देन के बीच हमेशा संदेह बना रहता था क्योंकि इनका वजन और शुद्धता जाँचना कठिन होता था।

इसके बाद सिक्कों का चलन शुरू हुआ। भारत में सबसे पहले चाँदी के सिक्के बने। भारत में कई अलग–अलग राजा थे। हर राजा अपने राज्य के लिए सिक्के जारी करवाता था। दिल्ली की गद्दी पर बैठे शेरशाह सूरी ने ऐसा ही एक चाँदी का सिक्का चलाया जिसे उसने 'रुपया' नाम दिया। सिक्के के आने से हर बार वजन करना और शुद्धता जाँचने की जरूरत नहीं रही।

जब उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य के समय में मुद्रा के रूप में सोने की मुहर, चाँदी का रुपया तथा ताँबे का बना दाम चलता था,

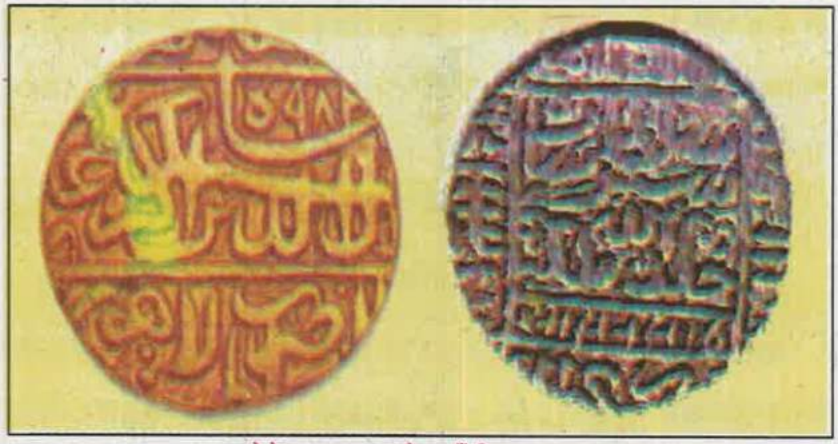

सोने का मुहर और चाँदी का रुपया

उस समय दक्षिण भारत में सोने के बने सिक्के हुण और पणम् का चलन था। परन्तु आज जो सिक्के चलते हैं वे एल्यूमीनियम तथा निकिल के बने होते हैं। इन सिक्कों की लागत इनके मूल्य से कम होती है।

अल्युमीनियम, निकल से बने आधुनिक सिक्के

पत्र मुद्रा या कागजी मुद्रा –

सिक्कों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में होने वाली परेशानी एवं सिक्कों को घिस–घिस कर अपना फायदा बनाने की आदत को देखते हुए कागज के नोट का चलन शुरू हुआ। इसे पत्र या कागजी मुद्रा कहा जाता है। भारत में कागज के नोट छपवाने तथा जारी करने का अधिकार सिर्फ **भारतीय रिजर्व बैंक** को है। अभी हमारे देश में दो रुपये, पाँच रुपये, दस रुपये, बीस रुपये, पचास रुपये, सौ रुपये, पाँच सौ रुपये तथा एक हजार रुपये का नोट भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किया जाता है।

प्रश्न – लेन–देन के माध्यम के रूप में पैसा सभी द्वारा स्वीकार किया जाता है। पैसे द्वारा किसी भी वस्तु का मूल्य आसानी से तय किया जा सकता है। इसका संग्रह, संचय या बचत करना सुविधाजनक है। इसे एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना आसान होता है। यह कैसे? समझाएँ।

बाजार एवं व्यापार के फैलने के साथ मुद्रा के स्वरूप में बदलाव आते गया। मुद्रा के विकास के साथ–साथ बाजार का विकास हुआ। एक स्थान से दूसरे स्थान पर वस्तुओं का व्यापार बढ़ने लगा। वस्तुओं को बेचने वाले (विक्रेता) तथा वस्तुओं को खरीदने वाले (क्रेता) की संख्या बढ़ी। फिर बाजार का स्वरूप बदला। खरीद–बिक्री का रूप भी बदला।

इसे आगे की कहानी द्वारा समझा जा सकता है :

रचित अपने मुहल्ले की दुकान पर कॉपी, किताब, पेंसिल एवं रबड़ खरीदने के लिए जाता है। उसके सभी सामानों का मूल्य जोड़कर 50 रुपया होता है। रचित दुकानदार को 50 रुपया का नोट देता है। यहाँ रचित मुद्रा देकर वस्तुओं को खरीदता है। दुकानदार मुद्रा लेकर वस्तुओं (किताब, कॉपी, पेन्सिल, रबड़) को बेचता है। दुकानदार को बिक्री से जो रुपये प्राप्त हुए उसका प्रयोग वह आगे दुकान में बिक्री के लिए सामान खरीदने में करता है। आमदनी के कुछ रुपयों से वह अपनी तथा अपने परिवार के जरूरत की वस्तुओं को खरीदता है तथा कुछ रुपये वह भविष्य के लिए बचाकर रखता है।

प्रश्न

1. रचित और दुकानदार को क्या सुविधा प्राप्त हुई ?
2. यहाँ मुद्रा विनिमय का कौन सा गुण दिखाई दिया जो वस्तु विनिमय में नहीं है?

ऊपर आपने देखा कि मुद्रा से लेन–देन की क्रिया, भुगतान करने की क्रिया तथा बचत करने की क्रिया सम्पन्न हुई। इसमें वस्तु के बदले कितनी कीमत चुकायी जाए, यह भी निर्धारित किया गया अर्थात् यहाँ पर मुद्रा के समग्र कार्यों का सम्पादन हुआ।

बैंक –

जब **मौद्रिक विनिमय प्रणाली** का प्रचलन शुरू हो गया तब आमदनी या अर्जित रुपयों का संग्रह आसान हो गया। बाद में संग्रहित रुपयों को सुरक्षित रखने के लिए बैंक की

अवधारणा शुरू हुई। समय के साथ–साथ आधुनिक युग में टेलीफोन, इंटरनेट अथवा संचार माध्यमों का विकास हुआ। इससे बाजार में भौतिक रूप में भी परिवर्तन हुआ।

टेलीफोन और इन्टरनेट के माध्यम से भी वस्तुओं की खरीद–बिक्री होने लगी है। बैंक द्वारा भी इसके लिए कई सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। बैंक अपने ग्राहकों को किसी वस्तु के बदले चेक द्वारा भुगतान की सुविधा प्रदान करता है।

चेक का चित्र

प्रश्न– चेक द्वारा लेन–देन कैसे किया जाता है? परिवार एवं शिक्षक के साथ चर्चा करें।

इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में लेन–देन अथवा खरीद–बिक्री के लिए बैंक अपने ग्राहकों को **ए टी एम–सह–डेबिट कार्ड** जारी करता है। इसे **प्लास्टिक मुद्रा** भी कहा जाता है। इसके द्वारा कोई बिना पास में रुपया रखे, बैंक में जमा रुपये के आधार पर किसी वस्तु को खरीद सकता है।

ए.टी.एम. कार्ड

प्रश्न – 1. ए टी एम मशीन के आने से क्या सुविधा मिली ? इसके प्रयोग में क्या सावधानी बरतनी चाहिए ? शिक्षक के साथ चर्चा करें।

2. क्या चेक से लेन–देन करने में पत्र मुद्रा की आवश्यकता होती है ?

ए.टी.एम. मशीन

अभ्यास

1. बिन पैसे के लेन देन में 'भाव' कैसे तय होता है ?
2. पैसे के माध्यम से लेन–देन में किस प्रकार सहूलियत होती है ?
3. नीचे दी गयी तालिका देखकर समझाएँ कि किसी भी दो व्यक्तियों के बीच सौदा क्यों नहीं हो पा रहा है ?

	राजन	रंजीत	रबीन
खरीदना चाहते हैं –	गुड़	बकरी	चावल
बेचना चाहते हैं –	बकरी	चावल	गुड़

4. रचित तथा दुकानदार को लेन–देन में क्या सहूलियत हुई ?
5. मुद्रा का चलन कैसे शुरू हुआ ?
6. पत्र मुद्रा कैसे शरू हुई होगी ?
7. आप अपनें कक्षा के दोस्तों के साथ वस्तुओं की अदला–बदली द्वारा लेन–देन या आदान–प्रदान करते हैं। इनकी सूची बनाए। क्या यह वस्तु विनिमय प्रणाली का उदाहरण है?
8. इस पाठ में वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों से संबंधित कुछ चित्र दिए गये हैं। इन कठिनाइयों को दर्शाते हुए कुछ अन्य चित्र बनाएँ ।